

संस्कृत सामान्यम् ।

उपशास्त्री ॥

अनिवार्य प्रथम पत्रम् ।

प्रश्न → डीप् प्रत्यय का प्रयोग कब और कहाँ होता है ? उदाहरण द्वारा पुष्ट करें ।

उत्तर →

कुमारवस्था के अर्थ में वर्तमान अकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में डीप् प्रत्यय हो, ऐसा ब्रह्माकरणी द्वारा विद्वान किया गया है ।

पाणिनि मुनि का सूत्र है → "वयसि प्रथमे ।"

प्रथमवयवाचिनोऽदन्तात् स्त्रियां डीप् ल्यात् ।

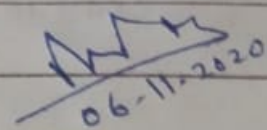
कुमारवस्था अथवा आयु (उम्र) की प्रथमावस्था का वाचक शब्द बाल, बल्स आदि भी हैं किन्तु इन शब्दों के साथ स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप् (आ) प्रत्यय लगता है । तब बाला, बल्सा आदि पद बनते हैं । इनके साथ डीप् प्रत्यय कहीं नहीं लगा ।

"वयसि प्रथमे," यहाँ वयसि का अर्थ युवावस्था से है । प्रथमे यानि नव (नया) । तब सूत्रार्थ होगा → अदन्त (अकारान्त) प्रातिपदिक शब्द जो प्रथम युवावस्था का बोधक हो, उसके साथ स्त्रीत्व की विवक्षा में डीप् प्रत्यय हो ।

यथा → कुमार + डीप् = कुमारी ।

बचूट + डीप् = बचूटी (नवशोवना स्त्री) ।

चिरण्ट + डीप् = चिरण्टी ( " " ) ।

  
06-11-2020

डॉ० निर्मल कुमार झा (रा० प्राचार्य) ।  
रा० उ० सं० महावि० सुखसैना, पूर्णियाँ ।

संस्कृतसामान्यम् ।  
अनिवार्यपत्रम् ।

उपशास्त्री I

शब्दरूपम्

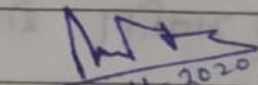
Date \_\_\_\_\_  
Page \_\_\_\_\_

" गौ " शब्दः, ओकारान्तः, पुल्लिङ्गम् ।

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्र० वि०	गौः	गावौ	गावः
द्वि० "	गाम्	"	गाः
तृ० "	गवा	गोन्याम्	गोभिः
च० "	गवे	"	गोन्यः
पं० "	गोः	"	"
षष्ठी "	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी "	गवि	"	गोषु
सम्बोधनम्	हे गौः !	हे गावौ !	हे गावः !

सखि शब्दः, इकारान्तः, पुल्लिङ्गम् ।

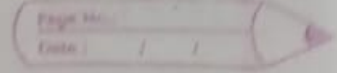
प्र० वि०	सखा	सखाद्यौ	सखाद्यः
द्वि० वि०	सखाद्यम्	"	सखीन्
तृ० "	सख्या	सखिन्याम्	सखिभिः
च० "	सख्ये	"	सखिन्यः
पं० "	सख्युः	"	"
षष्ठी "	"	सख्यौः	सखीनाम्
सप्तमी "	सख्यौ	"	सखिषु
सम्बोधनम्	हे सखे !	हे सखाद्यौ !	हे सखाद्यः !

  
06-11-2020

डॉ० निर्मलकुमार झा, (सं० प्राचार्य)  
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

संस्कृत सामान्यम् ।  
अनिवार्य प्रथम पत्रम् ।

उपशास्त्री

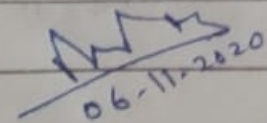


प्रश्न → डीप् प्रत्यय का प्रयोग कब और कहाँ होता है ? उदाहरण द्वारा पुष्ट करें ।

उत्तर →

कुमारावस्था के अर्थ में वर्तमान अकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में डीप् प्रत्यय हो, ऐसा वैयाकरणों द्वारा विधान किया गया है । पाणिनि मुनि का सूत्र है → "वयसि प्रथमे ।" प्रथमवयौवाचिनोऽदन्तात् स्त्रियां डीप् ल्यात् । कुमारावस्था अथवा आयु (उम्र) की प्रथमावस्था का वाचक शब्द बाल, बल्स आदि भी हैं किन्तु इन शब्दों के साथ स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप् (आ) प्रत्यय लगता है । तब बाला, बल्सा आदि पद बनते हैं । इनके साथ डीप् प्रत्यय कहीं नहीं लगा ।

"वयसि प्रथमे," यहाँ वयसि का अर्थ युवावस्था से है । प्रथमे यानि नव (नया) । तब सूत्रार्थ होगा → अदन्त (अकारान्त) प्रातिपदिक शब्द जो प्रथम युवावस्था का बोधक हो, उसके साथ स्त्रीत्व की विवक्षा में डीप् प्रत्यय हो । यथा → कुमार + डीप् = कुमारी ।  
बचूट + डीप् = बचूटी (नवयौवना स्त्री) ।  
चिरण्ट + डीप् = चिरण्टी ( " " ) ।

  
06-11-2020

डॉ० निर्मल कुमार झा (रा० प्राचार्य)  
रा० ३० सै० महावि० सुखसैना, पूर्णियाँ

शास्त्रीसाहित्यम् ।द्वन्द्वविचारः ।

प्रश्न → निम्नांकित द्वन्द्व किय जाति के हैं ?  
उनके लक्षण लिखें ।

उत्तर →

उपेन्द्रवजा → यह त्रिष्टुप् जाति का द्वन्द्व है । इस द्वन्द्व में ग्यारह अक्षर होते हैं । इस द्वन्द्व

के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण तथा दो गुरु क्रम से होते हैं । इसके पादान्त में यति होती है ।

लक्षण है → " उपेन्द्रवजा जतजास्ततो गः । "

उदाहरण पूर्व की कक्षा में दिया जा चुका है । दात्र-द्वारं उन्हें याद कर लें ।

मुजङ्गप्रयातम् → यह द्वन्द्व बारह अक्षरों वाली जगती जाति से आता है । इस द्वन्द्व में

चार चकार यानि चार चगण होते हैं ।

" मुजङ्गप्रयातं मवेद्यैश्चतुर्भिः । "

शिश्वरिणी → अत्यष्टि जाति का यह द्वन्द्व है । इसमें सत्रह अक्षर होते हैं । अक्षरों का

क्रम इस प्रकार है → चगण, भगण, नगण, सगण तथा एक लघु एवं एक गुरु ।

इस द्वन्द्व में द्वाे तथा अंतिम सत्रहवें अक्षर पर यति होती है → " रल्लै रुद्रैश्चिद्वन्ना यमनसभला गः शिश्वरिणी । "

यति → षड्रसाः, रुद्रैः (एकादश रुद्राः)  
(द्वौ)

ग्यारहवां अक्षर यानि पादान्त के

सत्रहवां अक्षर पर यति हो ।

06-11-2020

डॉ० निर्मल कुमार झा (सं० प्राचार्यः)  
रा० उ० सं० महावि० सुरवसेना, पूर्णियाँ ।